26 जनवरी 2023, मूल्य 2 रुपये, वर्ष 41, अंक 7, कुल पृष्ठ 36 ISSN 2454 - 5163

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन का

श्रीमज्जिनेन्द्र

पंचकल्याणक

प्रतिष्ठा महोत्सव

शुक्रवार, दिनांक 20 जनवरी से गुरुवार, 26 जनवरी 2023

वीतराग-विज्ञान

(पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का मुखपत्र)

सम्पादक :
डॉ. हुकमचंद भारिल्ल

वीतराग-विज्ञान (474)

हिन्दी, मराठी व कन्नड़ भाषा में प्रकाशित

जैनसमाज का सर्वाधिक बिक्रीवाला आध्यात्मिक मासिक

सम्पादक :

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

सह-सम्पादक :

डॉ. संजीवकुमार गोधा

प्रकाशक एवं मुद्रक :

ब्र. यशपाल जैन द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि., जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पर्क-सूत्र :

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015

फोन :(0141)2705581, 2707458

व्हाट्सऐप नं. : 7412078704

E-mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

ISSN 2454 - 5163

शुल्क :

आजीवन	:	251 रुपये
वार्षिक	:	25 रुपये
एक प्रति	:	2 रुपये

मुद्रण संख्या :

हिन्दी	:	7000
मराठी	:	2000
कन्नड़	:	1000
कुल	:	**10000**

पंचकल्याणक के महत्त्वपूर्ण तथ्य

सर्वज्ञ भगवान कैसे होते हैं और उन्होंने आत्मा का कैसा स्वरूप कहा है? - यह पहिचानकर, अपनी आत्मा का भान प्रगट करना ही महोत्सव है और वही कल्याण का मार्ग है।

यह तो भगवान की प्रतिष्ठा का महोत्सव चल रहा है। भगवान ने जैसा कहा, वैसी आत्मा की महिमा और पहिचान ही सच्चा महोत्सव है।

परमार्थ से तो आत्मस्वभाव की जो अनन्त ज्ञानमय सम्पत्ति है, उसे प्रगट करके राग का अभाव करना ही महोत्सव है।

भगवान के प्रतिष्ठा महोत्सव के प्रीतिभोज में आत्मा के पकवान परोसे जा रहे हैं। बादाम, पिस्ता और लड्डूरूप जड़ का भोजन जो सब कराते हैं, परन्तु यहाँ तो आत्मा का अमृत परोसा जा रहा है, उसको चखे तो मोक्षदशा हुए बिना नहीं रहेगी।

जो जीव इन अरिहन्त भगवान की प्रतिष्ठा करता है, वह जीव अल्प काल में भगवान हुए बिना नहीं रहता।

देखो, यह प्रतिष्ठा के महोत्सव में आत्मा के स्वभाव की बात समझे तो अपनी आत्मा में धर्म की प्रतिष्ठा होती है।

जिसने अपनी आत्मा में भगवान की प्रतिष्ठा की, वह अल्प काल में साक्षात् भगवान हो जाएगा।

- आध्यात्मिकसत्पुरुष गुरुदेवश्री कानजीस्वामी

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का, घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 41 (वीर निर्वाण संवत् 2549) 474/अंक : 07

अहो यह उपदेशमाहीं...

अहो यह उपदेशमाहीं, खूब चित्त लगावना।
होयगा कल्यान तेरा, सुख अनन्त बढ़ावना।।टेक।।

रहित दूषन विश्वभूषन, देव जिनपति ध्यावना।
गगनवत निर्मल अचल मुनि, तिनहिं शीस नवावना।।
अहो यह उपदेशमाहीं।।1।।

धर्म अनुकंपा प्रधान, न जीव कोई सतावना।
सप्ततत्त्वपरीक्षना करि, हृदय श्रद्धा लावना।।
अहो यह उपदेशमाहीं।।2।।

पुद्गलादिकतैं पृथक्, चैतन्य ब्रह्म लखावना।
या विधि विमल सम्यक्त्व धरि, शंकादि पंक बहावना।।
अहो यह उपदेशमाहीं।।3।।

रुचैं भव्यनको वचन जे, शठनको न सुहावना।
चन्द्र लखि जिमि कुमुद विकसै, उपल नहिं विकसावना।।
अहो यह उपदेशमाहीं।।4।।

'भागचन्द' विभाव तजि, अनुभव स्वभावित भावना।
या बिन शरन्य न अन्य जगतारण्य में कहुँ पावना।।
अहो यह उपदेशमाहीं।।5।।

– कविवर पण्डित भागचन्दजी

मंगल आमंत्रण

श्री टोडरमल स्मारक भवन
जयपुर में
पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट
द्वारा आयोजित

ग्यारहवाँ वार्षिक महोत्सव

शुक्रवार, 24 फरवरी से रविवार 26 फरवरी, 2023 तक

सद्धर्मप्रेमी बन्धुवर,

हर्ष का विषय है कि राजस्थान की प्रसिद्ध गुलाबी नगरी जयपुर में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सदुपदेश से संस्थापित ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन स्थित पंचतीर्थ जिनालय के2012 में आयोजित ऐतिहासिक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के ग्यारहवें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में श्री टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में त्रि-दिवसीय समारोह का भव्य आयोजन अनेक मांगलिक अनुष्ठानों सहित किया जाएगा।

यह समारोह 24 फरवरी से 26 फरवरी, 2023 तक सम्पन्न होगा।

इस अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित अभयकुमारजी देवलाली, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा आदि विद्वानों का समागम प्राप्त होगा।

निवेदक

श्री सुशीलकुमार गोदिका
अध्यक्ष

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल
महामंत्री

एवं समस्त ट्रस्टीगण पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट

सम्पर्क सूत्र : 8949033694

सम्पादकीय

अधूरी उल्टी आत्मकथा

(गतांक से आगे...) 3

परमध्यान

परमध्यान का स्वरूप जो मुनिवर श्री नेमिचन्द्रसिद्धान्तिदेव ने द्रव्यसंग्रह में प्रस्तुत किया है; वह इसप्रकार है –

(गाथा)

मा चिट्ठह मा जंपह मा चिंतह किं वि जेण होइ थिरो।
अप्पा अप्पम्मि रओ इणमेव परं हवेज्झाणं।।56।।

(हरिगीत)

बोलो नहीं सोचो नहीं अर चेष्टा भी मत करो।
उत्कृष्टतम यह ध्यान है निज आतमा में रत रहो।।56।।

कुछ भी चेष्टा मत करो, कुछ भी मत बोलो और कुछ भी चिन्तवन मत करो। इससे अपना आत्मा निजात्मा में तल्लीन होकर स्थिर हो जायेगा। यह स्थिरता ही परमध्यान है।

उक्त गाथा की टीका लिखते हुये श्री ब्रह्मदेव लिखते हैं –

"हे विवेकीजनो! नित्य, निरंजन और निष्क्रिय निज शुद्धात्मा की अनुभूति को रोकने वाले शुभाशुभ चेष्टारूप काय व्यापार, शुभाशुभ अन्तर्बहिर्जल्परूप वचन व्यापार और शुभाशुभ विकल्पजालरूप चित्त व्यापार रंचमात्र भी मत करो – ऐसा करने से यह आत्मा तीन योग के निरोध से स्वयं में स्थिर होता है''

देखो, यहाँ टीकाकार ब्रह्मदेव शुभाशुभ काय चेष्टारूप काय व्यापार, शुभाशुभ अन्तर्बहिर्जल्परूप वचन व्यापार और शुभाशुभ-विकल्पजल्परूप चित्त (मन) व्यापार को शुद्धात्मा की अनुभूति को रोकने वाला बता रहे हैं; क्योंकि ध्यान शुद्धभाव रूप है और ये सभी शुभाशुभ भाव अशुद्धभावरूप हैं।

आगे की टीका में लिखते हैं -

''सहज-शुद्ध-ज्ञान-दर्शनस्वभावी परमात्मतत्त्व के सम्यक् श्रद्धान-ज्ञान-आचरणरूप अभेद रत्नत्रयात्मक परमसमाधि से उत्पन्न, सर्वप्रदेशों में आनन्द उत्पन्न करनेवाले सुख के आस्वादरूप परिणति सहित, निजात्मा में रत-परिणत-तल्लीन-तच्चित्त-तन्मय होता है।

आत्मा के सुखस्वरूप में तन्मयपना ही निश्चय से परमध्यान है, उत्कृष्ट ध्यान है। उस परमध्यान में स्थित जीवों को जिस वीतराग परमानन्दरूप सुख का प्रतिभास होता है, वही निश्चयमोक्षमार्गस्वरूप है।''

ध्यान के उक्त स्वरूप में कुछ भी चेष्टा नहीं करनी है, कुछ भी बोलना नहीं और कुछ भी सोचना नहीं है; मात्र सहज भाव से जानते रहना है।

काय की चेष्टा, बोलना और सोचना तो निरन्तर चालू ही है। अभी तक जो शक्ति इनमें लग रही है; अब उस शक्ति को इनके रोकने में लगानी है।

नहीं, ऐसा कुछ नहीं करना है। इन्हें न तो करना है और न रोकना है। ये सब कार्य तो जड़ की क्रिया है। इनमें कुछ नहीं करना है।

परपदार्थों का तो यह आत्मा कुछ करता ही नहीं है, कर ही

नहीं सकता है। इन्हें तो सहजभाव से जानते रहना है, देखते रहना है। इनका तो सहज ज्ञाता-दृष्टा ही रहना है। बिना विकल्प के सहजभाव से जानते-देखते रहना ही इसका सहज स्वभाव है।

किसे जानते-देखते रहना?

प्रत्येक संसारी जीव की क्षयोपशमज्ञान की पर्याय का ज्ञेय सुनिश्चित है। उसे ही जानते-देखते रहना है।

ध्यान की अवस्था में सहजभाव से तो आत्मा का ही जानना होता है; परन्तु कदाचित अन्य का भी जानना होता है, पर वीतरागता खण्डित नहीं होती है; इसलिए ध्यान कायम रहता है।

अत: यह सिद्ध ही है कि ज्ञान की पुनरावृत्ति (रिपीटेशन) ही ध्यान है। हमारे सभी तीर्थंकर ध्यान में सहजभाव से यही सब करते रहे हैं। यही वास्तविक धर्म है। यही सभी प्रकार के दु:खों से मुक्ति का उपाय है।

मन, वचन और काय के व्यापार से पूर्णत: निवृत्तिरूप और निर्विकल्प ज्ञानभाव की पुनरावृत्तिरूप ध्यान कैसे होता है? - इस प्रश्न का उत्तर सहजभाव से (आसानी से) प्राप्त नहीं होता।

मुनिराज छह घड़ी प्रात:, छह घड़ी दोपहर और छह घड़ी शाम को सामायिक (ध्यान) करते हैं; व्रती श्रावक चार-चार घड़ी और अविरत सम्यग्दृष्टि दो-दो घड़ी सामायिक (ध्यान) करते हैं। मिथ्यादृष्टियों के तो ध्यान (सामायिक) होता ही नहीं हैं।

जितने भी जीवों ने आजतक केवलज्ञान की प्राप्ति की है, अरहंत-सिद्ध दशा की प्राप्ति की है; वह सब ध्यान की अवस्था में ही की है। वह ध्यान की अवस्था कैसी होती है - यह जानना प्रत्येक आत्मार्थी को अत्यन्त आवश्यक है।

जिस ध्यान के लगातार अन्तर्मुहूर्त तक होने पर केवलज्ञान की प्राप्ति हो जाती है; वह ध्यान कैसा होगा – इस बात पर गम्भीरता से विचार होना चाहिये।

आखिर अपने आत्मा और परमात्मा अर्थात् पंच परमेष्ठियों को सहज जाननेरूप निर्विकल्प ध्यान कैसे रहता है; उसका क्या रूप है, उसका क्या स्वरूप है – मूलत: यही जानना यहाँ अभीष्ट है।

अधिकांश देखा तो यह जाता है कि लोग सामायिक अर्थात् ध्यान के नाम पर णमोकार महामंत्र का जाप या किसी स्तोत्र विशेष का पाठ करते रहते हैं; परन्तु यह सब तो आम्नाय नाम के स्वाध्याय में आता है।

समस्या यह है कि बार-बार ध्यान आकृष्ट करने पर भी लोगों का ध्यान इस ओर नहीं जाता। मैं उन लोगों से, जो लोग इस बारे में कुछ भी जानते हैं, उनसे अत्यन्त विनयपूर्वक निवेदन करता हूँ कि वे लोग कृपाकर स्पष्ट अवश्य करें।

मुझे किसी से कोई शिकायत नहीं है। मैं तो सहजभाव से जानना चाहता हूँ; अत: निवेदन कर रहा हूँ।

●

कुछ लोग ऐसा कहते हैं कि हम लोग स्वयं तो आत्मचिन्तन में लगे रहते हैं, आत्मा का जाप करते रहते हैं; पर लोगों से कहते हैं कि ध्यान में तो कुछ भी न करने की बात है। ध्यान में तो न कुछ करना है, न बोलना है और न सोचना है। जैसा कि द्रव्यसंग्रह की 56वीं गाथा में कहा गया है। करना, बोलना और सोचना – ये सब तो जड़ पुद्गल की क्रिया हैं।

करना आहार वर्गणा का कार्य है, बोलना भाषा वर्गणा का कार्य है और सोचना मनो वर्गणा का कार्य है और यह तीनों वर्गणाएँ पुद्गल के परिणमन है; पौद्गलिक हैं।

ये ध्यान कैसे हो सकते हैं? ध्यान तो स्पष्टरूप से आत्मा का परिणमन है। करना, बोलना, सोचना आत्मा के कार्य नहीं होने से ध्यान नहीं हो सकते।

अरे, भाई! वर्तमान अवस्था में चिन्तन-मनन तो होता ही है। चिन्तन-मनन से ही तो आत्मार्थीजन सही निर्णय पर पहुँचते हैं।

हम सभी तो आगम के सेवन से, युक्तियों के अवलम्बन से, परम्परा गुरु के उपदेश से और आत्मा के अनुभव से वस्तु के असली स्वरूप के निर्णय में लगे रहते हैं - इसमें गलती क्या है?

यह सब तो करना ही है। समयसार की आत्मख्याति टीका में आचार्य अमृतचन्द्रदेव ने यही तो कहा है कि आचार्य कुन्दकुन्ददेव का ज्ञानवैभव आगम के सेवन, युक्ति के अवलम्बन, परम्परा गुरु के उपदेश और आत्मा के अनुभव से उत्पन्न हुआ था।

यही हम करते हैं और सबसे यही करने को कहते हैं; परन्तु ये सब ध्यान नहीं है। ध्यान तो निर्विकल्प अवस्था का नाम है। आत्मानुभव को छोड़कर - ये सब तो स्वाध्याय के ही रूप हैं।

आत्मानुभव का उत्कृष्टरूप करणलब्धि में प्रगट होता है। आत्मानुभव को एक अपेक्षा से ध्यान भी कह सकते हैं। वास्तव मतो अपने में अपनेपन का अनुभव ही अनुभव है। सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति अनुभव के काल में ही होती है।

निश्चयनयाश्रित आत्मसाधना में संलग्न ज्ञानियों के जीवन में

आवश्यक व्यवहारमार्ग भी यथास्थान, यथायोग्य समाहित रहता है। इसके माध्यम से ये अपनी बात को आगे तो बढ़ाते ही हैं; निश्चय की स्थापना भी करते हैं, उसे जन-जन तक पहुँचाने का काम करते हैं। इनके जीवन में निश्चय-व्यवहार का अद्भुत संतुलन देखने को मिलता है। **(क्रमशः)**

ध्यान के विशिष्ट नाम..

वही परब्रह्मस्वरूप है, वही परमविष्णुस्वरूप है; वही परमशिवस्वरूप है, वही परमबुद्धस्वरूप है, वही परमजिनस्वरूप है, वही निरंजनस्वरूप है, वही निर्मलस्वरूप है, वही स्वसंवेदनज्ञान है, वही शुद्धात्मदर्शन है, वही परमात्मा का दर्शन है, वही अंतःतत्त्व है, वही आत्मा की संवित्ति है, वही नित्यपदार्थ की प्राप्ति है, वही परमसमाधि हैं, वही परमानन्द है, वही नित्यानन्द है, वही सहजानन्द है, वही सदानन्द है, वही परमस्वाध्याय है, वही निश्चय मोक्ष का उपाय है, वही एकाग्रचिन्तानिरोध है, वही परमयोग है, वही भूतार्थ है, वही परमार्थ है, वही निश्चय पंचाचार है, वही समयसार है, वही अध्यात्मसार है, वही समतादि निश्चयषट् आवश्यक स्वरूप है, वही अभेदरत्नत्रयस्वरूप है, वही वीतराग सामायिक है, वही परम शरण-उत्तम-मंगल है, वहीं समस्त कर्मों के क्षय का कारण है, वही निश्चय चतुर्विध आराधना है, वही दिव्यकला है, वही परम अद्वैत है, वही परम अमृतरूप परमधर्मध्यान है, वही रागादिविकल्परहित ध्यान है, वही निष्कल ध्यान है, वही परमस्वास्थ्य है, वही परमवीतरागपना है, वही परम एकत्व है।

ध्यान का स्वरूप : पृष्ठ क्र. – 24

छहढाला प्रवचन

11

सिद्धि प्राप्ति का उपाय

यों चिन्त्य निज में थिर भये, तिन अकथ जो आनंद लह्यो,
सो इन्द्र नाग नरेन्द्र वा अहमिन्द्रकैं नाहीं कह्यो।
तब ही शुकल ध्यानाग्नि करि, चउघाति विधि कानन दह्यो,
सब लख्यो केवलज्ञानकरि, भविलोक को शिवमग कह्यो ।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजी कृत छहढाला की छठवीं ढाल पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

पहले मुनिवरों को होनेवाले शुद्धोपयोग स्वरूपाचरण का वर्णन विस्तार से किया है। उस स्वरूपाचरण की पराकाष्ठा होने पर केवलज्ञान प्रकट होता है। अहो! उसकी महिमा के बारे में क्या कहें? सम्यग्दर्शन की महिमा अपार है तो केवलज्ञान की महिमा की तो क्या बात कहना? यहाँ ग्यारहवें छन्द में केवलज्ञान प्रकट होने की विधि बतलाते हैं।

इसप्रकार जो शुद्धोपयोग द्वारा अपने स्वरूप का चिन्तवन कर अर्थात् ध्याकर उसमें स्थिर होते हैं, वे मुनिराज अकथ्य अर्थात् वचनातीत आनन्द प्राप्त करते हैं। वैसा आनन्द इन्द्रों को, नागेन्द्रों अर्थात् भवनवासी देवों के इन्द्रों को, नरेन्द्रों अर्थात् चक्रवर्तियों को तथा सर्वार्थसिद्धि के अहमिन्द्रों को भी प्राप्त नहीं होता। यद्यपि सम्यग्दृष्टियों ने वैसे आनन्द का नमूना चखा है; तथापि मुनियों जैसा प्रचुर आनन्द उन्हें भी नहीं होता, इसलिए इन्द्र भी मुनिराज के चरणों में वन्दन करते हैं।

शुद्धोपयोग द्वारा स्वरूप के ध्यान में लीन मुनिराज जब शुद्धता की श्रेणी

चढ़ते हैं, तब उन्हें शुक्लध्यान होता है। उस शुक्लध्यानरूपी अग्नि द्वारा वे चार घाति कर्मरूपी जंगल को एक अन्तर्मुहूर्त में ही जला देते हैं और केवलज्ञान प्रकट करके समस्त जगत को जान लेते हैं तथा दिव्यध्वनि द्वारा भव्यजीवों को मुक्ति का मार्ग दिखाते हैं। दिव्यध्वनि का योग किसी अरहन्त को होता है और किसी को नहीं भी होता है। मुख्य बात तो केवलज्ञानादि की है, वह तो प्रत्येक मोक्षगामी जीव को होता ही है।

अहो! जैन मुनियों को रागरहित ऐसा अद्भुत शुद्धोपयोगरूप स्वरूपाचरण होता है कि उस समय बाहर में ढोल-नगाड़े बजते हों या शरीर को सिंह-बाघ आदि खाते हों तो भी उनका लक्ष्य वहाँ नहीं जाता। वे स्वरूप के आनन्द में ही मस्त रहते हैं और उससे भी अधिक उग्र ध्यान द्वारा क्षपक श्रेणी माँडकर केवलज्ञान प्रकट कर लेते हैं। आनन्द में अतिशय एकाग्रता द्वारा स्वरूप में स्थिर रहनेवाले मुनिराज को शुक्लध्यान प्रकट होता है। शुक्ल ध्यान में परिणाम की विशुद्धता अत्यधिक बढ़ती जाती है और वे चार घातिकर्मरूपी वन को अग्नि के समान शुक्लध्यान द्वारा जला देते हैं।

देखो! चार घातिकर्म को क्षय करने की ताकत शुभराग में नहीं है। राग से तो घातिया कर्मों का बन्ध होता है। जब तक संज्वलन कषाय का सूक्ष्मराग बाकी रहता है, तब तक घातिकर्म नष्ट नहीं होते। जब राग का सम्पूर्ण नाश होने पर पूर्ण वीतरागता होती है, तब अन्तर्मुहूर्त बाद चार घातिकर्मों का नाश होता है और केवलज्ञानादि अनन्त चतुष्टय प्रकट होते हैं।

श्रीमद् राजचन्द्रजी ने लिखा है - जीव एक अखण्ड सम्पूर्ण द्रव्य है, इसलिए उसकी ज्ञान सामर्थ्य पूर्ण है; जो पूर्णत: वीतरागी होता है, वही सर्वज्ञ होता है। ऐसी वीतरागता निजस्वरूप में स्थिरता द्वारा मुनियों को ही प्रकट होती है। पूर्ण वीतरागता के बिना किसी को केवलज्ञान नहीं होता और शुक्लध्यान के बिना किसी को वीतरागता नहीं होती और शुद्धोपयोग के बिना किसी को शुक्लध्यान नहीं होता। जो सम्यग्दर्शन-ज्ञानपूर्वक

शुद्धोपयोग की सामर्थ्य से चारित्रदशा प्रकट करके मुनि होते हैं और फिर ध्यान के द्वारा निजस्वरूप में निश्चल होते हैं, वे शुक्लध्यान के प्रहार से मोह का क्षय करके तथा ज्ञानावरणादि घातिकर्मों का भी क्षय करके केवलज्ञान का द्वार खोल देते हैं। वे आत्मा स्वयं सर्वज्ञ परमात्मा बन जाते हैं और तीन लोक के समस्त पदार्थों को उनकी त्रिकालवर्ती पर्यायों सहित एकसाथ साक्षात् प्रत्यक्ष जानते हैं, अनन्त अलोक को भी अपने ज्ञान की अनन्तता में ज्ञेयरूप से डुबो देते हैं। **केवलज्ञान का कोई अचिन्त्य सामर्थ्य है।**

ऐसे केवलज्ञानी सर्वज्ञ परमात्मा आयुपर्यन्त मनुष्य देह की दशा में आकाश में विचरण करते हैं और यदि उसप्रकार के वचनयोग का उदय हो तो दिव्यध्वनि द्वारा भव्यजीवों को मोक्षमार्ग का उपदेश देते हैं। जब अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर इस भरतभूमि में विचरण करते थे, तब उनके साथ सात सौ अर्हन्त भगवान, सर्वज्ञ परमात्मा विचरते थे। इस समय विदेहक्षेत्र में ऐसे लाखों केवली भगवन्त अर्हन्त दशा में विचरण कर रहे हैं; उन्हें हमारा नमस्कार हो।

वह केवलज्ञान कैसे प्रकट होता है? अकथ्य आनन्द से भरपूर शुक्लध्यान में स्थिरता से केवलज्ञान प्रकट होता है। वन, जंगल में आत्मध्यान में लीन मुनिराज को जो आनन्द है, वह आनन्द स्वर्ग के वैभव में इन्द्रों को भी नहीं है। आत्मा स्वयं आनन्द का धाम है। बाह्य वैभव में आत्मा का आनन्द नहीं भरा है। रत्नत्रयवन्त दिगम्बर सन्तों के पास तो कुछ भी बाह्य वैभव नहीं है, वे वस्त्र का धागा भी नहीं रखते तो भी उनके अन्तर में सुख का पार नहीं है। वीतरागता जैसा सुख अन्यत्र कहाँ है? **असंख्य वर्षों तक स्वर्ग में रहनेवाले अज्ञानी को अतीन्द्रिय सुख का एक कण भी नहीं मिलता और निज स्वरूप में लीन होकर मुनिराज अन्तर्मुहूर्त में अचिन्त्य अनन्त सुख प्रकट कर लेते हैं** – चैतन्यस्वभाव की ऐसी सामर्थ्य है।

आत्मा स्वयं अखूट सुख का भण्डार है, उसमें लीन होकर उसका चिंतन करने पर वह कल्पवृक्ष के समान तत्काल परमसुख प्रदान करता है। कल्पवृक्ष तो इन्द्रियसुखरूप जड़ वस्तुएँ देते हैं, वे कोई सम्यक्त्वादि अतीन्द्रिय वस्तुएँ नहीं देते; परन्तु यह चैतन्य कल्पवृक्ष आत्मा सम्यक्त्वादि अतीन्द्रिय सुख तथा केवलज्ञान और सिद्धपद देता है।

सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति के समय आत्मा के अतीन्द्रिय आनन्द का थोड़ा वेदन होता है। थोड़ा होने पर भी वह अचिन्त्य है, फिर तीनकषाय रहित और तीन रत्नसहित मुनिदशा होने पर आनन्द का वेदन बढ़ता है; फिर स्वरूप में लीन होकर शुक्ल ध्यान द्वारा श्रेणी माँढ़ने पर आनन्द का वेदन बढ़ता ही जाता है और अन्त में केवलज्ञान होने पर आत्मा परिपूर्ण आनन्दरूप परिणमित हो जाता है।

'देखो! यहाँ आनन्द की शुरुआत से लेकर पूर्णता तक बीच में राग का नामो-निशान भी नहीं है' - ऐसे रागरहित आनन्द का वेदन सम्यग्दृष्टि गृहस्थ को भी होता है।

जब उपयोग अन्दर में शान्तस्वरूप में स्थिर होता है। **'तब मैं साधक हूँ या सिद्ध हूँ'** - ऐसा विकल्प भी नहीं होता। **(क्रमशः)**

नाटक समयसार अध्यात्म का सर्वोत्कृष्ट नाटक है और ये पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव व्यवहार के सर्वोत्कृष्ट नाटक हैं, जो हमारे जीवन को परिमार्जित करते हैं। मूल पात्रों के जीवन को सीमित समय में चतुर निर्देशकों के निर्देशन में अभिनेताओं द्वारा अभिनय के माध्यम से प्रस्तुत किया जाना ही तो नाटक का वास्तविक स्वरूप है।

इन पंचकल्याणकों का निर्देशक प्रतिष्ठाचार्य होता है। प्रतिष्ठाचार्य के निर्देशन में तीर्थंकरों के जीवन की कल्याणकारी घटनाओं को पात्रों द्वारा सीमित समय में पंचकल्याणकों के स्टेज पर प्रस्तुत किया जाना ही पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव है। इसमें नाटक के सभी तत्त्व विद्यमान हैं।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव पृष्ठ - 11

नियमसार प्रवचन –

मुनियों का समरसीभाव

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के परमार्थप्रतिक्रमणाधिकार की गाथा 104 पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। गाथा मूलत: इसप्रकार हैं –

सम्मं मे सव्वभूदेसु वेरं मज्झं ण केणवि।
आसाए वोसरित्ता णं समाहि पडिवज्जए।।104।।

(हरिगीत)

सभी से समभाव मेरा ना किसी से वैर है।
छोड़ आशाभाव सब मैं समाधि धारण करूँ।।104।।

अन्वयार्थ : सभी जीवों के प्रति मुझे समताभाव है, मुझे किसी के साथ बैर नहीं है। वस्तुत: मैं आशा को छोड़कर समाधि को प्राप्त करता हूँ।

(गतांक से आगे....)

टीका : इस गाथा में अन्तर्मुख परम-तपोधन की भावशुद्धि का कथन है। जिसने समस्त इन्द्रियों के व्यापार को छोड़ा है – ऐसे मुझे भेदविज्ञानियों तथा अज्ञानियों के प्रति समता है; मित्र-अमित्ररूप परिणति के अभाव के कारण मुझे किसी प्राणी के साथ बैर नहीं है; सहज वैराग्यपरिणति के कारण मुझे कोई भी आशा नहीं वर्तती; परम समरसीभाव संयुक्त परम समाधि का मैं आश्रय करता हूँ अर्थात् परम समाधि को प्राप्त करता हूँ।

प्रवचन

अहो! मैं ज्ञानस्वभावी चैतन्यवस्तु हूँ। मैं किसी का मित्र या शत्रु नहीं और न कोई दूसरा मेरा मित्र या शत्रु है। इसलिये मुझे किसी के प्रति आशा

नहीं है और न किसी के प्रति बैर है। मैं तो सर्वप्रकार की आशा छोड़कर चैतन्य में लीन होता हूँ, राग-द्वेषरहित परमसमाधि प्रगट करता हूँ। **हे जगत के जीवो! हमने जैसा किया है वैसा तुम भी करो।**

''यहाँ इस गाथा में अन्तर्मुख तपोधन की भावशुद्धि का कथन है। जिसने समस्त इन्द्रियों के व्यापार को छोड़ा है – ऐसे मुझे भेदविज्ञानी तथा अज्ञानी जनों के प्रति समता है।''

मुनिराज कहते हैं कि अहो! मैं तो बहिर्मुखलक्ष्य छोड़कर अपने चैतन्य में अन्तर्मुख होता हूँ। जड़ेन्द्रियाँ तो मेरे से भिन्न हैं ही और अन्दर में ज्ञान के खण्ड-खण्ड उपयोगरूप भावेन्द्रिय का व्यापार भी छोड़कर मैं चैतन्य की समता में ठहरता हूँ। मुझे बाह्यलक्ष्य न होने से भेदविज्ञानी तथा अज्ञानी सभी जीवों के प्रति समता है। अत: **अपने जैसे दूसरे सन्तों के प्रति मुझे राग नहीं और महाविराधक अज्ञानी-जीवों के प्रति मुझे द्वेष नहीं है।**

सब जीव अपने-अपने परिणमन प्रवाह में बह रहे हैं। कोई जीव मेरे चैतन्य में से बहती हुई निर्मल-पर्याय के प्रवाह को रोकने में समर्थ नहीं है। धर्मी को भी श्रद्धा में तो ऐसी ही वीतरागता है, परन्तु यहाँ तो स्वरूप में लीन हुये मुनिवरों की समाधि की बात है।

देखो यह मुनियों की वीतराग परिणतिरूप दशा! अहो!! हमारा लक्ष्य ही इन्द्रियों की तरफ से हटकर चैतन्य में लगा है, वहाँ किसी केवली के प्रति राग नहीं और अज्ञानी के प्रति द्वेष नहीं; सभी जीवों में समता ही है। ऐसी लीनता होने के पहले ऐसी दृष्टि भी तो प्रगट होनी चाहिये। मैं ज्ञायक और सर्वपदार्थ ज्ञेय, उसमें एक इष्ट और दूसरा अनिष्ट – ऐसे दो भाग नहीं हैं। मुनिराज ध्यान में बैठे हों और 96 करोड़ पैदल सेना का स्वामी चक्रवर्ती राजा, 16 हजार देवों के साथ उनके चरणों में नमन करे; तथापि उनके एक रोम में भी मान का विकल्प नहीं। शत्रु आकर विशेष उपसर्ग करे;

तथापि उसके ऊपर द्वेष का विकल्प नहीं ऐसे मुनियों को परमसमभाव है।

इसलिये कहा भी है –

बहु उपसर्गकर्त्ता के प्रति भी क्रोध नहीं,
वन्दे चक्री तथापि न लावे मान जो।
देह जाय पर माया होय न रोम में,
लोभ नहीं हो प्रबल सिद्धिनिधान जो।।

देह जाती हो तो जाने दे, मैं तो ज्ञायक हूँ – इसप्रकार रोम में भी देह के प्रति ममता न हो। महान ऋद्धि-सिद्धि प्रगट हुई हों, वचन बोलें वहाँ कंचन के ढेर लग जावें अथवा देवगण उतरकर आ जावें; तथापि मुनियों को ऐसी बाह्यऋद्धि की भावना नहीं होती। मुनिराज कहते हैं कि हम तो हमारी चैतन्य की केवलज्ञानऋद्धि को साधनेवाले हैं।

देखो! श्रीमद् को मुनिदशा नहीं थी, गृहस्थदशा में थे; तथापि भावना ऐसी करते हैं –

अपूर्व अवसर ऐसा किस दिन आयेगा?
कब होऊँगा बाह्याभ्यन्तर निर्ग्रन्थ जो?
सब सम्बन्ध का बंधन तीक्ष्ण छेदकर,
विचरूँगा कब महापुरुष के पंथ जो।।

अहो! संत महात्मा हमको मिलें और उनकी आज्ञानुसार शिष्यानुवृत्ति करके महापुरुषों के पंथ में कब विचरण करूँगा – ऐसा अपूर्व अवसर कब आयेगा? उन्होंने ऐसी भावनासहित अपना देह विसर्जन किया था और यहाँ तो यह पद्मप्रभुमुनिराज वैसी दशा में वर्तते हैं। इसलिए कहते हैं कि अहो! हमें चैतन्यमूर्ति साक्षी है। जगत के सर्वजीवों के प्रति हमें समता है। जगत के जड़-चेतन पदार्थ निज-निज परिणमन-प्रवाह प्रमाण वर्त रहे हैं। तू

उनको दृष्टा रहकर देख, समता में रहकर शान्ति रख – ऐसी समता मोक्षमार्ग है। कोई दुष्ट घानी में डालकर मुनि को पेल डाले फिर भी ऐसा क्यों हुआ – ऐसी ममता मुनि के नहीं है; किन्तु चैतन्य की समता है। ऐसी समता के फल में मोक्षदशा सामने आकर खड़ी हो जाती है। मुनियों को किसी के प्रति **'यह मेरा मित्र और यह मेरा शत्रु'** – ऐसी परिणति नहीं है। अर्थात् राग-द्वेषरूप परिणति के अभाव के कारण किसी प्राणी के प्रति बैर नहीं है, सबके प्रति समता ही है।

जिसने समस्त इन्द्रियों के व्यापार को छोड़ा है – ऐसे मुझे भेदविज्ञानियों और अज्ञानियों के प्रति समता है। आत्मा त्रिकाल पवित्र ज्ञाता-दृष्टा तथा आनन्दस्वरूप है, उसने इन्द्रियों के व्यापार को छोड़ा है अर्थात् आत्मा में/ त्रिकाली स्वभाव में इन्द्रियाँ तथा इन्द्रियों का व्यापार होता ही नहीं – ऐसा प्रथम निर्णय किया है। **इन्द्रियाँ तथा उनकी तरफ का खण्ड-खण्ड ज्ञान मैं नहीं, मैं अखण्ड ज्ञायक हूँ** – इसप्रकार प्रथम प्रतीति में इन्द्रियों के व्यापार को छोड़ा है। धर्मीजीव को प्रथम ऐसी दृष्टि होनी चाहिये तत्पश्चात् विशेष स्वरूप स्थिरता की यह बात है।

आचार्यदेव स्वयं कहते हैं कि जिसने श्रद्धा और स्थिरता – इन दोनों अपेक्षाओं से इन्द्रियों के व्यापार को छोड़ा है – ऐसे मुझे सर्व जीवों के प्रति समता है। **तत्त्व का स्वीकार करने वाले ज्ञानी हों अथवा सत्य की निन्दा करने वाले अज्ञानी हों** – दोनों के प्रति हमें राग-द्वेष नहीं है। हम तो ज्ञाता-दृष्टा हैं। जिन्हें पुण्य-पाप के विकार से रहित शुद्ध ज्ञानानन्द आत्मा का साक्षात्कार हुआ है – ऐसे हमारे जैसे धर्मात्मा के प्रति भी हमें राग नहीं है। तत्त्व का विरोधी हो तो उसके प्रति भी यह ऐसा क्यों? इसप्रकार का विकल्प भी हमारे नहीं उठता। उसके वर्तमान समय की योग्यता हमारे द्वारा हो सकती है, उसे हम कर सकते हैं - ऐसा हम स्वीकार नहीं करते। वे अपनी योग्यता से चाहे जैसे परिणमे उससे हमें कोई राग-द्वेष नहीं है। जगत

के प्राणी अपने कारण से परिणमन कर रहे हैं कोई किसी को समझा दे – ऐसी शक्ति किसी में नहीं है। सामने वाला जीव हमारा बुरा करेगा, उसे हम रोक दें – ऐसा हम नहीं मानते हैं। हम तो साधर्मी तथा शत्रु – दोनों के प्रति समता ही रखते हैं। ऐसी समता – यथार्थ समता चैतन्यज्ञानान्दस्वभावी आत्मा के भान बिना नहीं हो सकती। **अनुकूलता के प्रति ठीकपने का भाव और प्रतिकूलता के प्रति अठीकपने का भाव** – वह विषमता है। वह सच्चिदानन्द भगवान आत्मा में नहीं है। चैतन्य भगवान तो पुण्य-पाप के भावरूप विषमता से रहित अन्तर शान्त उपशमरस का पिण्ड है – ऐसा निर्णय किये बिना समता नहीं हो सकती।

यह ठीक हुआ और यह अठीक हुआ – ऐसी विकल्पावली स्वरूप में नहीं है। ऐसा भान हुये बिना विकल्पवृत्ति टल ही नहीं सकती। जगत के पदार्थ ज्ञान में ज्ञेय हैं, ज्ञेयों की अवस्था अपने कारण से पलटती है, उसे दूसरा कौन पलटावे? इसलिये उनके प्रति हमें समता तथा विषमता का विकल्प नहीं उठता है। अनुकूल तथा प्रतिकूल संयोगों के कारण ठीक-अठीक की वृत्ति नहीं होती, वह तो अपने अपराध के कारण ही होती है। आत्मा के स्वरूप में वह वृत्तियाँ नहीं हैं – ऐसा चैतन्य का भरोसा प्रथम ही होना चाहिये, इसके बिना विषमभाव टलता नहीं है। **(क्रमशः)**

यह पंचकल्याणक नकली नहीं है, असली पंचकल्याणक की असल-नकल है, सत्य प्रतिलिपि है; अतः इसका फल भी असली के समान ही प्राप्त होता है। नाटक भी तो नायक का असली जीवन नहीं होता, नायक के जीवन की असल-नकल ही होता है; पर उसे असली के रूप में ही प्रस्तुत किया जाता है। उसीप्रकार यह पंचकल्याणक भी तीर्थंकर ऋषभदेव के असली पंचकल्याणक की असल नकल है, पर इसे असली के रूप में ही प्रस्तुत किया जाता है।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव पृष्ठ – 12

समयसार की 47 शक्तियों पर प्रवचन

त्यागोपादानशून्यत्व शक्ति

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी द्वारा समयसार की 47 शक्तियों पर किये गये प्रवचनों को यहाँ पाठकों के लाभार्थ क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है।

(गतांक से आगे....)

प्रवचनसार के नय अधिकार में आता है कि मैं स्वयं से अशून्य हूँ, पूर्ण हूँ और पर से शून्य हूँ। मैं सर्व विभाव परिणति से रहित हूँ - ऐसा होने पर भी जो शुभभाव से कल्याण होना मानता है, उनकी यह मान्यता गलत है; क्योंकि शुभभाव तो बंधरूप है, बंध का कारण है और भगवान आत्मा उससे शून्य है।

आहाहा...! लोक में निगोद से लेकर सिद्धपर्यंत सभी जीव निजस्वभाव से पूर्ण भरपूर हैं और पर से शून्य हैं। **निगोददशा से सिद्धदशा तक, सर्व अवस्थाओं में एक ज्ञायकप्रभु भगवान आत्मा निज-चैतन्य स्वभाव से पूर्ण भरपूर है और पर से शून्य है।** भाई! द्रव्यस्वभाव त्रिकाल ऐसा का ऐसा ही है, उसमें कभी घट-बढ़ नहीं होती है। आहाहा...! केवलज्ञान और सिद्धदशा भी प्रगट हो जाय तो भी द्रव्यस्वभाव तो ऐसा का ऐसा ही घट-बढ़ रहित रहता है - इसप्रकार स्वरूप से प्रत्येक आत्मा निर्विकल्प, भरितावस्था है, उसके आश्रय से परिणमन होने पर पूर्ण शुद्धता प्रगट होती है - इसी का नाम धर्म है।

समयसार की 34वीं गाथा में आया है कि आत्मा को राग के त्याग का कर्तापना नाममात्र है। परमार्थ से आत्मा राग का त्याग नहीं करता; पर जब वह अपने स्वरूप में स्थिर होता है, तब सहज ही राग की उत्पत्ति न होने से

उसे व्यवहार से राग के त्याग का कर्ता कहा जाता है। अपना स्वरूप निजस्वभाव से पूर्ण भरा है, उसकी प्रतीति करके स्वरूप में स्थिरता करना चारित्र है। स्वरूपस्थिरतारूप यह चारित्र राग के त्यागस्वरूप है, जिससे राग का त्याग किया - ऐसा नाममात्र से कहा जाता है। परमार्थ से राग का त्याग आत्मा कर ही नहीं सकता; क्योंकि परमार्थ से भगवान ज्ञायक में राग का ग्रहण-त्याग है ही नहीं। आहाहा...! इस ज्ञायकस्वभाव का अवलम्बन लेकर जो पर्याय प्रगट होती है, वह भी राग के ग्रहण-त्याग से रहित है - इसप्रकार द्रव्य-गुण-पर्याय तीनों ही राग के/विकार के ग्रहण-त्याग से रहित हैं।

आहाहा...! यह अलौकिक बात भगवान सर्वज्ञ के मत के अलावा कहीं नहीं है। भाई! जिसप्रकार पिता की बात बहुत सावधानी से सुनते हैं; उसीप्रकार परमपिता जिन परमेश्वर की यह बात बहुत सावधानी से सुनना चाहिए; क्योंकि इसी में अपना कल्याण है।

आहाहा...! चैतन्यमूर्ति प्रभु आत्मा शुद्ध चैतन्यस्वभाव से भरपूर है। वह पर के ग्रहण-त्याग से शून्य है। यह आत्मा का त्यागोपादानशून्यत्व गुण नामक स्वभाव है। निज त्रिकाली द्रव्य के सन्मुख होकर परिणमन करने पर त्यागोपादानशून्यत्व गुण का परिणमन भी हो जाता है, जिससे प्रगट पर्याय में परद्रव्य का/ परभाव का ग्रहण-त्याग नहीं होता।

यहाँ प्रगट शुद्ध पर्याय को घट-बढ़ रहित बताया जा रहा है, अशुद्ध पर्याय को नहीं। स्वयं में प्रगट होनेवाली यह पर्याय पूर्ण शुद्ध हो या अपूर्ण शुद्ध हो, वह पूर्ण द्रव्य को ही सिद्ध करती है। सम्यग्दर्शन की पर्याय भी पूर्ण द्रव्य को सिद्ध करती है। अत: उस पर्याय को भी पूर्ण कहा जाता है। अहो! यह परमेश्वर का मार्ग किसी की कल्पना से उत्पन्न नहीं है, यह तो वस्तु का स्वरूप है भाई! कहा भी है न कि -

जिन सो ही है आत्मा, अन्य सो ही है कर्म।
इसी वचन से समझ ले, जिन प्रवचन का मर्म।।

आहाहा...! अन्दर भगवान ज्ञायक पूर्ण भरा है, उसमें एक शक्ति ऐसी है कि जिससे प्रत्येक गुण की पर्याय पूर्ण भरितावस्थ है। प्रत्येक गुण की पर्याय में त्यागोपादानशून्यत्वशक्ति का रूप है, जिससे ज्ञान की पर्याय परज्ञेय के ग्रहण-त्याग से शून्य है। आनन्द की पर्याय आकुलता के ग्रहण-त्याग से शून्य है।

आहाहा...! यह तो अमृत का झरना बह रहा है। भाई! दिगम्बर संतों के अलावा कहीं यह झरना है ही नहीं। वे कहते हैं कि भगवान तुम परिपूर्ण हो और परिपूर्णता से जो पर्याय प्रगटी हो वह भी पूर्ण है, पर के ग्रहण-त्याग से रहित है।

सम्पूर्ण द्रव्य गुणी है तथा उसकी शक्तियाँ गुण हैं। उन गुणों का वर्णन यहाँ हो रहा है। **गुण, स्वभाव, सत् का सत्त्व** - इन सभी का एक ही अर्थ है। प्रारम्भ में ही आचार्यदेव ने कहा है कि 'ज्ञानमात्र में दृष्टि को अचलपने स्थापित करके, क्रमरूप और अक्रमरूप प्रवर्तमान तथा उनसे अविनाभावी जितना भी अनन्तधर्मसमूह दिखाई देता है' - वह सभी एक आत्मा है। यहाँ कहते हैं कि जो अनन्त शक्तियाँ हैं, वे अक्रमरूप हैं और शक्तियों का जो परिणमन होता है, वह क्रमशः प्रवर्तता है। यहाँ क्रम में अशुद्धता की बात नहीं लेना, शुद्धता की ही बात लेना है। अशुद्धता का जो ज्ञान होता है, वह स्वयं की पर्याय में स्वयं से होता है। ज्ञान की ऐसी ही सहज स्वपरप्रकाशक सामर्थ्य है। ज्ञान की पर्याय स्वपर को प्रकाशित करती हुई स्वयं स्वतः प्रगट होती है। 12वीं गाथा में जो यह कहा है कि '**व्यवहारनय विचित्र (अनेक) वर्णमाला के समान होने से, जाना हुआ उस काल में प्रयोजनवान है**' उसका भी यह अर्थ है।

यहाँ यह बताया जा रहा है कि क्रमवर्तीरूप और अक्रमवर्तीरूप जो अनन्तधर्मों का समूह है, वह सभी वास्तव में एक आत्मा है, 'उसमें यह शक्ति और यह शक्तिवान, यह पर्याय और यह पर्यायवान' - ऐसे भेदरूप व्यवहार को दूर करके त्रिकाली, शक्तिवान, एक द्रव्य की दृष्टि करना सम्यग्दर्शन है। सम्यग्दर्शन का विषय बहुत सूक्ष्म, अचिन्त्य और अलौकिक है। **(क्रमशः)**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

(गतांक से आगे....)

प्रश्न : दृष्टि को स्थिर करने के लिए सामने की वस्तु स्थिर होनी चाहिए; लेकिन दृष्टि तो पलटती रहती है, वह किस तरह स्थिर हो?

उत्तर : सामने स्थिर वस्तु हो तो उस पर नजर करने से दृष्टि स्थिर हो जाती है। भले ही जब (दृष्टिरूप पर्याय) स्थिर न रह सकती हो तो भी ध्रुव पर नजर एकाग्र करने से अन्य सारी वस्तु नज़र में आ जाती है। सारा आत्मद्रव्य दृष्टि में जाना जाता है। मूल बात यह है कि अन्दर में जो आश्चर्यकारी आत्मवस्तु है, उसकी अन्दर से महिमा नहीं आती। द्रव्यलिंगी साधु हुआ; लेकिन अन्दर से महिमा नहीं आती। पर्याय के पीछे समूचा ध्रुव महाप्रभु विद्यमान है - इसकी महिमा, आश्चर्य भासित हो तो कार्य होता ही है। आत्मा अनन्त-अनन्त आनन्द का धाम है, इसको विश्वास में लाना चाहिए। विश्वास से जहाज चलता है और समुद्र पार हो जाता है - ऐसे ही अन्दर में आत्मा की प्रभुता का विश्वास आये तब कार्य होता ही है।

जिसने जीवन ज्योति ऐसे चैतन्य का अनादर करके राग को अपना माना है, 'राग मैं हूँ' ऐसा माना है, उसने अपनी आत्मा का घात किया है। जिससे लाभ मानता है, उसको स्वयं का माने बगैर उससे लाभ माना नहीं जा सकता; इसलिए राग से लाभ मानने वाला स्वयं का ही घात करने वाला होने से दुरात्मा है, आत्मा का अनादर करने वाला है, अविवेकी मिथ्यादृष्टि है।

प्रश्न : इस पर से ऐसा होता है कि सम्यग्दर्शन प्राप्त करने का पात्र कौन है?

उत्तर : यह पात्र ही है, लेकिन पात्र नहीं है - ऐसा मान लेता है। यही शल्य बाधक होती है।

प्रश्न : क्या सविकल्प द्वारा निर्विकल्प नहीं होता है?

उत्तर : सविकल्प द्वारा निर्विकल्प नहीं होता; किन्तु कहा अवश्य जाता है; क्योंकि विकल्प को छोड़कर निर्विकल्प में जाता है, यह बताने के लिए सविकल्प द्वारा हुआ - ऐसा कहा जाता है। रहस्यपूर्ण चिट्ठी में आता है कि 'रोमांच होता है' अर्थात् वीर्य अन्दर जाने के लिए उल्लसित होता है।

प्रश्न : शास्त्राभ्यास आदि करने पर भी उससे सम्यग्दर्शन नहीं होता, तो सम्यग्दर्शन के लिए क्या करना?

उत्तर : यथार्थ में तो एक आत्मा की ही रुचिपूर्वक सबसे पहिले आत्मा को जानना - वही सम्यग्दर्शन का उपाय है। आत्मा का सत्य निर्णय करने वाले को पहिले सात तत्त्वों का सविकल्प निर्णय होता है, शास्त्राभ्यास होता है, शास्त्राभ्यास ठीक है - ऐसा भी विकल्प होता है; लेकिन उससे यथार्थ निर्णय नहीं होता। जहाँ तक विकल्प सहित है, वहाँ तक परसन्मुखता है, परसन्मुखता से सत्य निर्णय नहीं होता। स्वसन्मुख होते ही सत्य का निर्विकल्प निर्णय होता है। सविकल्पता द्वारा निर्विकल्प होना कहा तो भी सविकल्पता निर्विकल्प होने का सही कारण नहीं है। तब भी सविकल्पता पहिले होती है, इसीकारण सविकल्प द्वारा निर्विकल्प होना कहा जाता है।

प्रश्न : क्या सम्यग्दृष्टि को अशुभभाव के सद्भाव में आयुष्य बँधती है?

उत्तर : सम्यग्दृष्टि को चौथे-पाँचवें गुणस्थान में व्यापार-विषयादि का अशुभराग भी होता है; तथापि सम्यग्दर्शन का ऐसा माहात्म्य है कि उसको अशुभभाव के समय आयुष्य नहीं बँधती, शुभभाव में ही बँधती है। सम्यग्दर्शन का ऐसा प्रभाव है कि उसके भव बढ़ते तो हैं ही नहीं; यदि भव होते भी है तो नीचा भव नहीं होता, स्वर्गादि का ऊँचा भव ही होता है। **(क्रमशः)**

विनय पाठ

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(दोहा)

अरहंतों को नमन कर नमूँ सिद्ध भगवान।
आचारज उवझाय अर सर्व साधु गुणखान।।1।।

मोक्ष मोक्ष के मार्ग में विद्यमान जो जीव।
यथायोग्य नम कर प्रभो वन्दन करूँ सदीव।।2।।

चौबीसों जिनराज की दिव्यध्वनि अनुसार।
ज्ञानिजनों ने जो लिखी वाणी विविधप्रकार।।3।।

नय-प्रमाण से विविधविध कही तत्त्व की बात।
भविकजनों के लिये जो एकमात्र आधार।।4।।

सब द्रव्यों के सभी गुण अर सामान्य-विशेष।
आज सभी को सहज ही हैं उपलब्ध अशेष।।5।।

जिनवाणी उपलब्ध है उसे बतावनहार।
बहुत अधिक दुर्लभ नहीं उसके जाननहार।।6।।

मोहनींद में जो पड़े नहीं कोई आधार।
साधर्मीजन कम नहीं उन्हें जगावनहार।।7।।

सारा जग बेचेत है मोहनींद के द्वार।
किन्तु हमें उपलब्ध हैं मार्ग बतावनहार।।8।।

महाभाग्य से प्राप्त हो देव-गुरु संयोग।
पर जिनवाणी मात की शरण सहज संयोग।।9।।

उसके अध्ययन मनन से चिन्तन से निजतत्व।
जाना जाता सहज ही होता है सम्यक्त्व।।10।।

जिनवाणी के मर्म को अरे जानने योग्य।
ज्ञान प्रगट पर्याय में होवे सहज संयोग[1]।।11।।

और कषायें मन्द हों भाव रहें निष्काम।
एक आतमा में लगे छोड़ हजारों काम[2]।।12।।

देव-गुरु संयोग या जिनवाणी के योग।
तत्व श्रवण में मन लगे और न मन में रोग[3]।।13।।

अरे क्षयोपशम विशुद्धि और देशना लब्धि।
जिसके ये तीनों बने उसे तत्त्व उपलब्धि।।14।।

आतम में अति अधिक रुचि जब होवे सर्वांग।
विशेष तरह की योग्यता वह लब्धि प्रायोग्य।।15।।

आतम का उपयोग जब आतम में रमजाय।
करणलब्धि है आतमा आतम माँहि समाय।।16।।

करणलब्धि के अन्त में आतम अनुभव होय।
सम्यग्दर्शन प्राप्त हो मन रोमांचित होय।।17।।

तीर्थंकर चौबीस ही हमें जगावनहार।
जागें आतम में लगें हो जावें भव पार।।18।।

देव-शास्त्र-गुरु की कृपा से कटता संसार।
नमन करूँ इन सभी को भगवन् बारंबार।।19।।

अरे हमारा आतमा आतम में रम जाय।
अन्य न कोई चाह मन आतम माहि समाय।।20।।

---

1. क्षयोपशम लब्धि 2. विशुद्धि लब्धि 3. देशना लब्धि

-●-

ढाईद्वीप पंचकल्याणक की आमंत्रण पत्रिका का...

जयपुर में हुआ भव्य विमोचन समारोह

जयपुर (राज.) : ढाईद्वीप जिनायतन इंदौर में होने वाले सदी के ऐतिहासिक श्री मज्जिनेंद्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की भव्य आमंत्रण पत्रिका का विमोचन ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में वृहद स्तर पर सम्पन्न किया गया।

30 दिसम्बर 2022 को प्रात: तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की अध्यक्षता में यह समारोह सम्पन्न हुआ, जिसमें अनेक ट्रस्टों, संस्थाओं, संघटनों एवं मन्दिरों के विशिष्ट पदाधिकारियों में श्री सुशीलकुमारजी गोदीका, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. शान्तिकुमारजीपाटील, श्री सुधांशुजी जैन, श्री नरेन्द्रजी बड़जात्या, श्री प्रदीपजी चौधरी, श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी, श्री शान्तिकुमारजी गंगवाल, डॉ. अखिलजी बंसल आदि मंचासीन थे एवं श्री मनीषजी वैद, श्री सुभाषजी जैन, श्री प्रकाशचन्दजी जैन, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री आदि जयपुर के सभी स्थानीय शास्त्री विद्वान उपस्थित रहे।

पंचकल्याणक के कार्याध्यक्ष पण्डित बिपिनजी शास्त्री ने पंचकल्याणक के प्रति सकल जैन समाज के उत्साह एवं महामंत्री डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने पंचकल्याणक की भव्यता एवं आदर्शता से संबंधित अनेक बातें कहीं। अन्त में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने उद्बोधन स्वरूप मंगल आशीष प्रदान किया।

इस महोत्सव की **प्रथम पत्रिका** डॉ. भारिल्ल के द्वारा मुमुक्षु समाज के गढ़ सोनगढ़ को लिखी गई एवं **द्वितीय पत्रिका** बिपिनजी शास्त्री ने टोडरमल ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदीका को पत्रिका भेंट की। पश्चात् समाज की प्रमुख संस्थाओं एवं प्रतिष्ठित महानुभावों का पत्रिकाएँ प्रेषित की गई। देशभर में लगभग 5000 की संख्या में पत्रिकाएँ भेजी गईं।

ढाईद्वीप का पंचकल्याणक हुआ भव्य एवं ऐतिहासिक

1164 जिनबिम्बों की हुई प्राण प्रतिष्ठा

इन्दौर (म.प्र.) : श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन शासन प्रभावना ट्रस्ट इन्दौर द्वारा आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के पुण्य प्रभावना योग में निर्मित विश्व की अद्वितीय रचना तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन का श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव 20 जनवरी से 26 जनवरी 2023 तक पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर के कुशाल निर्देशन में धूमधाम से आरम्भ हुआ।

यह पंचकल्याणक मुमुक्षु समाज का सबसे बड़ा पंचकल्याणक था, जिसमें लगभग 25000 लोग सम्मिलित हुए।

ढाईद्वीप के अनुसार इस जिनालय में 1164 प्रतिमाएं विराजमान की गईं, जिसमें विश्व की सबसे बड़ी सीमंदर भगवान की स्फटिकमणि की प्रतिमा सम्मिलित है।

इस अवसर पर अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान् तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का मंगल सान्निध्य प्राप्त हुआ। यह पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव बाल ब्र. अभिनंदनजी शास्त्री खनियांधाना के निर्देशन में संपन्न हुआ। पंचकल्याणक समिति के महामंत्री डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, कार्याध्यक्ष पंडित बिपिनजी शास्त्री मुंबई एवम् निर्देशक डॉ. संजीवकुमारजी गोधा थे। मंच संचालन पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवम् पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर ने किया।

20 जनवरी 2023 को गर्व कल्याणक की पूर्व भूमिका के रूप में मनाया गया, जिसमें प्रातःकाल ध्वजारोहण श्रीमती सृष्टी-यशजी जैन, श्रीमती सोनल-मुकेशजी परिवार, इन्दौर ने किया। प्रतिष्ठा मण्डप उद्घाटन श्रीमान कमलजी, साकेतजी, सहजजी बड़जात्या परिवार मुम्बई, प्रतिष्ठा मंच उद्घाटन श्रीमती आशा-नरेशजी, श्रीमती नम्रता-आकिन्चनजी लुहाडिया परिवार दिल्ली के हस्ते हुआ।

इस अवसर पर श्रीमती कमलप्रभाजी बड़जात्या परिवार इंदौर ने आचार्य धरसेन, श्रीमती सुषमा ध.प. कैलाशचन्द्रजी छाबड़ा परिवार मुम्बई ने आचार्य कुन्दकुन्द, श्री पद्मकुमारजी, विकासजी-वैभवजी-वरुणजी पहाड़िया परिवार इंदौर ने आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी, पण्डित शिखरचंदजी, संजयजी-राजीवजी-आलोकजी जैन परिवार विदिशा ने आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के चित्र का अनावरण किया।

दोपहर में प्रतिष्ठा मण्डप की वेदी पर विधि अध्यक्ष श्री जिनेन्द्र भगवान विराजमान, नान्दी विधान, वेदी पर मंगल कलश स्थापना, वेदी पर जिनवाणी विराजमान, इंद्र प्रतिष्ठा एवं याग मंडल विधान के उपरान्त आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सी.डी प्रवचन एवं रात्रि में अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन में का लाभ मिला। साथ ही 56 कुमारियों के नृत्य के उपरान्त माता मरूदेवी के 16 स्वपनों के मनोहर दृश्य दिखे।

21 जनवरी को राजा नाभिराय की राज्यसभा में 16 स्वपनों के फलों का भव्य प्रदर्शन किया गया एवम् इन्द्रों द्वारा गर्भकल्याणक की पूजन की गई।

ढाईद्वीप जिनायतन के मंदिर की शुद्धि, वेदी शुद्धि, शिखर पर स्थिति स्वर्ण कलश एवं ध्वजदण्ड शुद्धि के लिए घाट यात्रा निकाली गई, जिसमें महिलायें केसरिया वस्त्र पहनकर अपने मस्तक पर कलश धारण कर अयोध्यानगर से ढाईद्वीप तक पहुंची।

22 जनवरी को प्रातः जन्मकल्याणक संबंधी इन्द्रसभा व राजसभा का आयोजन किया गया एवं इन्द्र सभा में बाल तीर्थंकर ऋषभदेव के जन्म के क्षणों का आल्हादकारी अद्भुत दृश्य दिखाया गया।

सौधर्म इन्द्र-शची इंद्राणी का अयोध्या नगर में आगमन एवं बाल तीर्थंकर के अलौकिक सौंदर्य को निहार कर जन्म अभिषेक के लिए सुमेरू पर्वत पर प्रस्थान हुआ। जन्म कल्याणक का अदभुत भव्य जुलूस के उपरान्त पाण्डुक शिला पर बाल तीर्थंकर का 1008 कलशों से जन्माभिषेक एवं इन्द्रों ने जन्मकल्याणक की पूजन की।

रात्रि में श्री जिनेन्द्र भक्ति के उपरान्त पालना झूलन का विशिष्ट कार्यक्रम संपन्न हुआ, जिसमें मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय शिवराजसिंह चौहानजी का शुभागमन हुआ।

23 जनवरी को तप कल्याणक के अवसर पर इन्द्रसभा में चर्चा हुई। राज्यसभा में नीलांजना का नृत्य एवं मरण की घटना घटी, जिसे देख ऋषभदेव को वैराग्य आया। लौकान्तिक देव का वैराग्य की अनुमोदना एवं प्रथम पालकी उठाने का सौभाग्य मनुष्यों को प्राप्त हुआ। वन में तीर्थंकर की दीक्षाविधि संपन्न हुई एवं दीक्षाकल्याणक पूजन सम्पन्न हुई।

रात्रि में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की गतिविधियों पर आधारित समय की ओर नामक डॉक्यूमेंट्री का प्रदर्शन एवं वैराग्य नाटक प्रस्तुत किया गया।

24 जनवरी को तीर्थंकर मुनिराज की नवधाभक्तिपूर्वक सर्वप्रथम राजा श्रेयांश के कर-कमलों से आहारविधि सम्पन्न हुई। दोपहर में शोभायात्रा अयोध्यानगर से ढाईद्वीप जिनायतन तक पहुंची वहाँ जिनवाणी स्थापना, जिनवाणी की वेदी पर कलश व ध्वज विराजमान, कलशारोहण एवं ध्वजारोहण किया गया। ढाईद्वीप के जिनमंदिर, विद्वत निवास, गेस्ट हाऊस, छात्रावास, बेसमेंट में स्थित कानजीस्वामी ऑडीटोरियम एवं चित्रालय का उद्घाटन किया गया। साथ ही विशेषज्ञ विद्वानों द्वारा विद्वत संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

रात्रि में श्री जिनेन्द्र भक्ति एवं कुन्दकुन्द कहान शासन प्रभावना ट्रस्ट द्वारा ढाईद्वीप के स्वप्नदृष्टा श्री मुकेशजी जैन एवं तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में अपना विशिष्ट योगदान देने वाले बाबू जुगलकिशोर युगलजी कोटा, अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा, पण्डित उत्तमचन्दजी जैन सिवनी, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा, पण्डित चेतनभाई शाह राजकोट का मरणोपरान्त सम्मान किया गया। तथा अहमेक्को खलु शुद्धो नाटक दिखाया गया।

25 जनवरी को एक विशिष्ट श्रावक सभा एवम् विशेषज्ञ विद्वानों द्वारा विद्वत संगोष्ठी का अयोजन किया गया।

दोपहरकालीन सभा में अलौकिक सौंदर्य युक्त समवशरण की रचना की गई एवं भगवन ऋषभदेव की प्रथम दिव्यध्वनि का प्रसारण हुआ। तत्पश्चात् केवलज्ञान कल्याणक की पूजन की गई। रात्रि में डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली एवं डॉ. संजीवकुमार गोधा जयपुर (अप्रत्यक्ष) का सम्मान समारोह अयोजित किया गया। अंत में पंचकल्याणक महोत्सव में अपना बहुमूल्य योगदान देने वाले विद्वानों, श्रेष्टियों, पंच कल्याणक के पात्रों एवं व्यवस्थापकों को आभार ज्ञापित किया गया।

26 जनवरी को निर्वाण महोत्सव की विधि, मोक्ष कल्याणक पूजन एवम् 1164 भगवन्तों की स्थापना के साथ यह भव्य अयोजन सम्पन्न हुआ।

यह पंचकल्याण प्रतिष्ठा महोत्सव विशाल स्तर पर आयोजित किया गया, जिसमें प्रमुख मण्डप 1 लाख स्कॉयर फिट के विशाल क्षेत्र में बना, जिसमें 640 स्कायर फिट का भव्य मंच था।

सिद्धचक्र महामण्डल विधान सम्पन्न

भोपाल (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 25 दिसम्बर से 01 जनवरी 2023 तक तीर्थधाम ज्ञानोदय भोपाल में सिद्धचक्र महामण्डल विधान व व्याख्यानमाला का भव्य आयोजन किया गया। अवसर पर मुख्य विद्वानों में डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के समयसार व रत्नकरण्डश्रावकाचार पर, पण्डित हेमचन्दजी हेम देवलाली , पण्डित मनीषजी शास्त्री मेरठ, पण्डित गौरवजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित शुभमजी शास्त्री भोपाल के प्रवचनों का लाभ मिला।

विधान पण्डित संजयजी शास्त्री कोटा के निर्देशन में पण्डित अशोकजी उज्जैन, श्री दीपकजी धवल भोपाल एवं ज्ञानोदय के विद्यार्थियों के सहयोग से सम्पन्न हुआ।

समस्त कार्यक्रम श्री गुलाबचन्दजी जैन, श्री मनीषकुमारजी जैन, श्री आशुतोषजी जैन, अशोकजी सुभाष ट्रान्सपोर्ट परिवार के निर्देशन में श्री रतनचन्दजी शास्त्री, श्री अर्पितजी शास्त्री, श्री अंकितजी शास्त्री के सहयोग से सम्पन्न हुआ।

इंदौर पंचकल्याणक के माता-पिता का सम्मान

इंदौर (म.प्र.) : यहाँ ढाईद्वीप जिनायतन इन्दौर में होने वाले सदी ऐतिहासिक पंचकल्याणक में भगवान के माता-पिता बनने का सौभाग्य प्राप्त करने वाले श्रीमती चन्द्रकान्ता-आनन्दकुमारजी पाटनी के सम्मान में अनुमोदना स्वरूप 1 जनवरी 2023 को विशिष्ट समारोह का आयोजन किया गया, जिसका प्रारम्भ रात्रि में श्री जिनेन्द्र भक्ति पूर्वक हुआ।

इस अवसर पर बाल ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित बिपिनजी शास्त्री मुम्बई, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित विवेकजी शास्त्री इन्दौर का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

यह सम्मान समारोह श्री नवीनजी पाटनी व श्री प्रमोदजी पहाडिया एवं ढ़ाईद्वीप जिनायतन समीति के सहयोग से हुआ।

जैन शास्त्र, भक्ति गीत, तीर्थ दर्शन तथा पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये vitragvani app आज ही Download करें या Visit करें - www.vitragvani.com
विविध चित्रों के लिए Visit करें - www.gurukahanartmusuem.org
Daily updates :- FB-/vitragvani YT-c/ vitragvani Telegram
संपर्क सूत्र - श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

टोडरमल महाविद्यालय में नए वर्ष पर छाई नई उमंग

जयपुर (राज.) : श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु समय-समय पर अनेक गतिविधियों का संचालन करता रहा है। इस वर्ष दिनांक 24 दिसम्बर 2202 से 15 जनवरी 2023 तक खेल महोत्सव एवं सांस्कृतिक-साहित्यिक सप्ताह के अन्तर्गत विविध प्रतियोगितायें सम्पन्न हुई।

आचार्य समन्तभद्र खेल महोत्सव

24 दिसम्बर 2022 से 03 जनवरी 2023 तक खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ, जिसके उद्घाटन में श्री सुशीलकुमारजी गोदीका, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री आदि सभी अध्यापकगण उपस्थित थे।

वॉलीबाल में शास्त्री तृतीय वर्ष एवं वरिष्ठ उपाध्याय ने, **कबड्डी में** स्त्री तृतीय वर्ष एवं शास्त्री द्वितीय वर्ष ने, **कैरम (एकल)** में हर्षित जैन खनियांधाना एवं कपिल जैन बम्हौरी ने, **कैरम (युगल)** में हर्षित जैन खनियांधाना-कपिल जैन बम्होरी एवं सान्निध्य नेजकर दानोली-हर्षवर्द्धन पाटील कुम्भोज ने, **बैडमिटन (एकल)** में रितेश जैन अमरमऊ एवं अशेष मोदी विदिशा ने, **बैडमिंटन (युगल)** में रितेश जैन अमरमऊ-पुष्प जैन आगरा एवं द्वितीय स्थान पर विराग बैलोकर डासाला-सिद्धान्त उपाध्ये सांगली ने, **टेबल-टेनिस (एकल)** में चेतन जैन रहली एवं अमन सिंघई अलवर ने, **टेबल-टेनिस (युगल)** में आर्जव जैन सिवनी-आर्जव जैन सागर एवं वैभव जैन सागर-विराग जैन बैलोकर ने, **शतरंज में** निखलेश मैंद एवं हर्ष जैन फुटेरा ने, **स्लो-साईकल** में अमन जैन खनियांधाना एवं सोहम शाह सोलापुर ने, **रस्सीकूद** में सोहम शाह सोलापुर एवं भव्य जैन उदयपुर ने, **रस्सी खींच** में शास्त्री तृतीय वर्ष एवं वरिष्ठ उपाध्याय ने, **गोला फेंक** में महावीर भोकरे कोल्हापुर एवं सोमिल जैन खनियांधाना ने, **तस्करी फेंक** में महावीर भोकरे एवं श्रीवर्द्धन पाटील ने, **400 मी. दौड** में अशेष मोदी विदिशा एवं सानिध्य नेजकर ने तथा **800 मी. दौड़** में वैभव जैन सागर व यश जैन दमोह ने प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त किया। **क्रिकेट प्रतियोगिता** का आयोजन 31 जनवरी से रतनद्वीप क्रिकेट स्टेडियम में किया जाएगा।

समस्त आयोजन महाविद्यालय के निर्देशन में शास्त्री तृतीय वर्ष के सहयोग से सम्पन्न हुये। स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को प्रमाण-पत्र व पुरस्कार राशि प्रदान की गई।

आचार्य अमृतचन्द्र सांस्कृतिक एवं साहित्यिक प्रतियोगिताएँ

दिनांक 04 से 12 जनवरी 2023 तक सांस्कृतिक एवं साहित्यिक सप्ताह का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन समारोह सभा अध्यक्ष श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल के अतिरिक्त डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, श्रीमती कमलाजी भारिल्ल की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

तात्कालिक अनिवार्य भाषण प्रतियोगिता में आयुष जैन उदयपुर एवं नमन जैन हठा व ओम जैन ने, **संस्कृत सम्भाषण प्रतियोगिता में** आयुष जैन उदयपुर एवं सन्देश जैन दिल्ली ने, **अंग्रेजी भाषण प्रतियोगिता (शास्त्री वर्ग) में** स्वस्ति जैन मिरच एवं वैभव जैन सागर ने, **अंग्रेजी भाषण प्रतियोगिता (उपाध्याय वर्ग) में** सम्यक जैन दिल्ली एवं अन मोल मांगुलकर ने, **अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता में** अमन जैन-सोमिल जैन खनियांधाना एवं शाश्वत जैन सागर-कपिल जैन बम्हौरी ने, **काव्य पाठ प्रतियोगिता में** वैभव जैन ासागर एवं शाश्वत जैन सागर व सहज जैन छिन्दवाडा ने, **लधु नाटक प्रतियोगिता में** सहजता टीम एवं ज्ञानानन्द टीम ने, **चित्रकला प्रतियोगिता में** शाश्वत जैन सागर एवं निवेश जैन दिल्ली ने, **श्लोक पाठ प्रतियोगिता में** अंकित जैन कुटेरा एवं सन्देश जैन दिल्ली व सम्यक जैन दिल्ली ने, **कौन बनेगा कथाविद् (शास्त्री वर्ग) में** सन्देश जैन दिल्ली एवं अविरल जैन खनियांधान ने, **कौन बनेगा कथाविद् (उपाध्याय वर्ग) में** आयुष जैन उदयपुर एवं सम्यक जैन दिल्ली ने, **भजन प्रतियोगिता में** सन्देश जैन दिल्ली एवं सक्षम जैन ललितपुर ने, **आध्यात्मिक क्विज प्रतियोगिता में** अशेष मोदी विदिशा एवं तंदुल जैन दिल्ली व हर्ष जैन फुटेरा ने प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त किया। महोत्सव की विस्तृत जानकारी जैन पथ प्रदर्शक में प्रकाशित की जा चुकी है।

एक और उपाधि डॉ. अखिल बंसल के नाम

नाथ द्वारा (राज.) : यहाँ आयोजित दो दिवसीय डॉ. भगवती प्रसाद देवपुरा स्मृति समारोह में 2023 में राष्ट्र भाषा हिन्दी सम्पादन के क्षेत्र में अनुपम योगदान देने हेतु साहित्य मण्डल श्रीनाथ द्वारा ने शतादिक कलमकारों के मध्य डॉ. अखिल बंसल को पत्रकार प्रवर की उपाधि से सम्मानित किया गया।

डॉ. बंसल के सम्मान में साहित्यिक प्रतिष्ठान के प्रधान श्री श्यामजी देवपुरा व उनके सहयोगियों से प्रशस्ति पत्र, शॉल, श्रीफल, कलम व अगवस्त्र भेंट किया।

सम्मेद शिखर को पर्यटन स्थल घोषित करने के विरोध में...

जयपुर में सकल जैन समाज का मौन जुलूस

जयपुर (राज) : जैन धर्म के सर्वोच्च शाश्वत सिद्धक्षेत्र श्री सम्मेदशिखरजी को पर्यटन स्थल घोषित करने के विरोध में एवं पवित्र तीर्थ स्थल घोषित करने की मांग के तहत पूरे देश में चारों ओर विरोध का माहौल निर्मित हो रहा है।

तीर्थराज सम्मेद शिखर को पर्यटन स्थल बनाने से उसकी पवित्र नष्ट हो जाएगी, अभक्ष्य पदार्थों का भक्षण किया गया एवं हिंसात्मक व्यापार प्रारम्भ हो जायेंगे। वहाँ का अध्यात्ममयी वातावरण यात्रियों के लिए मनोरंजन का केन्द्र बन जाएगा।

इस परिस्थिति में शिक्षित जैन समाज अहिंसात्मक आंदोलन के माध्यम से आक्रोश व्यक्त कर रही है। इसी कड़ी में 25 दिसम्बर 2022 को भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं जैन श्वेताम्बर सोसायटी के निर्देशन में सकल जैन समाज (दिगंबर और श्वेतांबर) जयपुर के बैनर तले विशाल मौन जुलूस निकाला गया।

जयपुर के अग्रवाल कॉलेज से महावीर स्कूल तक निकले इस विशाल मौन जुलूस में बच्चों से लेकर वृद्धजनों तक सभी सम्मेद शिखर बचाओ की भावना से शामिल हुए। जुलूस में भीड का अन्दाजा इससे लगाया जा सकता है कि जुलूस का पहला छोर जब महावीर स्कूल पहुँचा तब अन्तिम छोर त्रिपोलिया बाजार में था, जिसमें लगभग 30 हजार से अधिक साधर्मी सम्मिलित हुए तथा सैकड़ों जैन बन्धु सीधे महावीर स्कूल पहुँच गए। जुलूस के अन्त में महावीर पब्लिक स्कूल के प्रांगण में भव्य धर्म सभा का आयोजन किया गया, जिसमें आचार्य सुनीलसागरजी ने समाज को सम्बोधित किया। जुलूस में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के सभी कार्यकर्त्ता एवं महाविद्यालय के समस्त विद्यार्थी उत्साह पूर्वक सम्मिलित हुए एवं **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा लिखित कृति शाश्वत तीर्थराज सम्मेद शिखर का 10,000 की संख्या में वितरण किया गया।**

देशभर लाखों की संख्या में जैनबन्धु अक्रोश में सड़क पर उतर आये हैं। कई लोग अमरण अनशन में बैठे हुए हैं। दिल्ली, मुम्बई, अहमदाबाद, सूरत आदि अनेक स्थानों पर रोजाना मौन जूलुस निकाले जा रहे हैं।

ढाईद्वीप जिनायतन में सदी के ऐतिहासिक.....

श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के ऐतिहासिक क्षण

अयोध्या नगरी का भव्य द्वार (प्रतिष्ठा मण्डप)

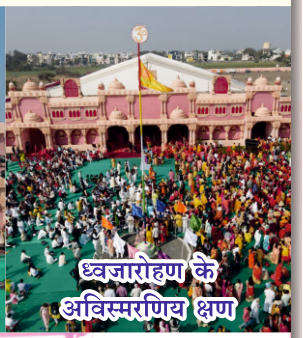
ध्वजारोहण के अविस्मरणिय क्षण

ध्वजारोहण से कार्यक्रम की मंगल शुभारंभ

महाविद्यालय के विद्यार्थियों का नृत्य

पंचकल्याणक के विधि अध्यक्ष भगवान

यागमण्डल विधान का उद्घाटन समारोह

अयोध्या नरेश नाभिराय की धर्मसभा

इंद्रलोक में सौधर्म इंद्र की सभा में धर्म चर्चा

R.N.I. No. 38278/83 Postal Regd. No. JaipurCity/421/2021-23

सौधर्म इंद्र द्वारा बाल तीर्थंकर का न्हवन

पालना झूलन का मनोहर दृश्य

समाधि का सार समझाते हुए डॉ. भारिल्ल

पंडाल में साधर्मियों की उमडी भीड़

मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री का पंचकल्याणक में शुभागमन

तपकल्याणक पर वैराग्य की प्रस्तुति

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल
शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., पीएच. डी.
सह-सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय , नेट, एम. फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.
प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन, एम. ए.
द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये
जयपुर प्रिंटर्स प्रा.लि., जयपुर से
मुद्रित एवं प्रकाशित।

प्रकाशन तिथि : 21 जनवरी 2023

If undelivered please return to -- **Pandit Todarmal Smarak Trust , A-4, Bapu Nagar, Jaipur - 302015**